Godda College, Godda

Name of the Teacher	Course	Sem	Subject	Title	Mode
Dr. Pankaj Kumar	B.Ed	II	TC-201	प्रमुख शिक्षण विधियाँ (विश्लेषण विधि, संश्लेषण विधि)	Pdf

P. Kumar
15/07/2020

विश्लेषण विधि के गुण :–

- यह विधि मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित होता है।
- इस विधि में बालक स्वयं अपनी समस्याओं के समाधान के लिए हल ढूंढ सकता है।
- इस विधि के द्वारा छात्रों में अन्वेषण करने की क्षमता और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।
- इस विधि से छात्रों में तर्क शक्ति, विचार शक्ति तथा विश्लेषण करने की क्षमता का विकास होता है।
- इस विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान अधिक स्थाई होता है तथा छात्र नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता है।

संश्लेषण विधि :–

- संश्लेषण का अर्थ है– अलग–अलग भागों को जोड़ना।
- संश्लेषण विधि संश्लेषण कार्य पर आधारित होता है।
- इस विधि में 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' चलते है।
- संश्लेषण विधि में पहले दी गई समस्त सूचनाओं को एकत्र किया जाता है फिर उसको हल किया जाता है।
- संश्लेषण में एक तथ्य की सत्यता की जाँच की जाती है परन्तु इससे प्रस्तुत समस्या का वास्तविक रुप ज्ञात नहीं हो पाता है।

संश्लेषण विधि के गुण :–

- समस्याओं को शीघ्रता, स्वच्छता और स्पष्टता से हल करने की दृष्टि से यह एक उपयुक्त विधि है।
- संश्लेषण विधि द्वारा थोड़े परिश्रम तथा समय से ही काम चल जाता है।
- संश्लेषण विधि में अध्यापक चिन्तनशील एवं छात्र निष्क्रिय रहते है।
- यह एक सूक्ष्म विधि है।
- इस विधि में बालकों को मानसिक शक्ति के उपयोग के कोई अवसर नहीं मिलते है।
- संश्लेषण विधि द्वारा छात्रों में रटने की आदत पड़ जाती है।
- संश्लेषण विधि द्वारा प्रस्तुत हल संगठित, क्रमबद्धता तथा सरलता से समझा जा सकता है।

पाठ्य–पुस्तक विधि (लाभ तथा आलोचनाएं) :–

- पाठ्य–पुस्तक विधि प्राचीन काल से प्रचलन में है।
- माध्यमिक विद्यालयों तथा विशेषकर हाईस्कूलों में जहाँ कि पाठ्य–पुस्तक से ही पाठ्यक्रम उपलब्ध हो जाता है। अध्यापक इस विधि का प्रयोग को प्राथमिकता देते है।
- प्राचीन काल में विषय ज्ञान का उद्देश्य पाठ्य–पुस्तकों को याद कर लेना बना लिया गया था।
- पाठ्य–पुस्तकों में से वैज्ञानिक तथ्यों को याद किया जाता था। विद्यार्थी भले ही तथ्यों का सिद्धांतों से संबंध स्थापित नहीं कर पाते थे परन्तु तथ्यों को रटकर याद अवश्य कर लेते थे।
- हॉल क्वेस्ट तथा फलकनबर्ग तथा अन्य विद्वानों के अनुसार "पाठ्य–पुस्तकों को एक अन्तिम उद्देश्य की भांति न मानकर पाठन की एक सहायक सामग्री की भांति माना जाना चाहिए।"

Scanned with CamScanner

पाठ्य-पुस्तक विधि के गुण –

- पाठ्य-पुस्तकों को सीखी गई ज्ञान की पूर्ति के लिए उपयोग में लाया जाये तो उसका महत्व बढ़ जाता है।
- कक्षा में पढ़ी हुई वस्तुओं को घर पर भी पाठ्य-पुस्तक की सहायता से दुहराया जा सकता है।
- कुछ पाठ्य-पुस्तकें इतने अच्छे तरह से संगठित रूप से लिखे होते हैं और स्थान-स्थान पर उदाहरणों की सहायता से समझाया जाता है कि विद्यार्थी उसको पढ़ कर अच्छी तरह से समझ सकते हैं।
- विद्यार्थियों को घर में व्यस्त रखने के लिए पाठ्य-पुस्तक से गृह कार्य दिया जा सकता है।

दत्त कार्य विधि [illegible] –

- दत्तकार्य विधि में पूरे वर्ष के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को छोटे-छोटे खण्डों में विभक्त कर लिया जाता है जिन्हें बालक एक निश्चित समय में पूरा करने का प्रयास करते हैं। ऐसे प्रत्येक खण्ड को दत्तकार्य या अधिन्यास [illegible] कहते हैं।
- प्रत्येक दत्तकार्य में किसी एक प्रकरण का अध्ययन अभिप्रेत रहता है तथा उसी सहायता के लिए उचित मार्ग प्रदर्शन का समावेश किया जाता है।
- दत्तकार्य विधि का सबसे बड़ा लाभ "शिक्षा का व्यक्तिकरण" है।
- यह विधि छात्रों को अधिक से अधिक आत्मनिर्भरता के अवसर प्रदान करते है।
- इस विधि की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि लिखे गये दत्तकार्य उच्च श्रेणी के हो।

दत्तकार्य के गुण –

- अध्यापक प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दे सकते है।
- दत्तकार्य विधि द्वारा बालकों में स्वाध्याय, स्वावलम्बन एवं आत्मविश्वास की भावनाओं का विकास होता है।
- छात्रों में अनुशासनहीनता नहीं पनपती है।
- अध्यापक एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते है। अतः छात्र-अध्यापक संबंध मधुर होते है।
- छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है।
- छात्र अपनी योग्यता के अनुसार आगे बढ़ते है तथा एक दूसरे की प्रगति में बाधक नहीं होते है।
- दत्तकार्य विधि से सिद्धांत व व्यवहार में सामंजस्य स्थापित होता है।
- छात्र श्रम की महत्ता को समझते है तथा यह विधि करके सीखने के सिद्धांतों पर आधारित होता है।

डाल्टन विधि (हेलन पार्कहर्स्ट) –

- डाल्टन विधि का प्रारम्भ 1920 ई० में अमेरिका के डाल्टन नामक नगर में हेलेन पार्कहर्स्ट द्वारा किया गया।
- इस पद्धति में छात्रों की क्षमता, अभिरुचि एवं उनकी योग्यता के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता होती है।
- डाल्टन पद्धति में छात्रों को कार्य करने में समय की बाध्यता नहीं होती है।

निरीक्षण विधि [illegible] –

- निरीक्षण का सामान्य अर्थ है – ध्यानपूर्वक देखना।
- किसी व्यक्ति के व्यवहार, आचरण, क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं आदि को ध्यानपूर्वक देखकर उसकी मानसिक दशा का अनुमान लगा सकते है।
- [illegible] के अनुसार निरीक्षण दो प्रकार का होता है 1. औपचारिक निरीक्षण– नियंत्रित दशाओं में एवं 2. अनौपचारिक निरीक्षण– अनियंत्रित दशाओं में किया जाता है।

इयर्ट विधि –

- इयर्ट विधि को इयर्ट प्रणाली नाम से जाना जाता है। यह एक पुरानी प्रणाली है।

Scanned with CamScanner

- इस उपागम में प्रस्तुतीकरण पर अधिक जोर दिया जाता है। इसमें छात्रों की रुचियों, अभिवृत्तियों, मूल्यों तथा सच्चों पर ध्यान नहीं दिया जाता है।
- यह पाठ्य–वस्तु केन्द्रित है। इसमें पूर्व ज्ञान को आधार मानकर नये मत रखे जाते है।
- हरबर्ट उपागम के पाँच पद इस प्रकार है – 1. प्रस्तुतीकरण, 2. तुलना एवं संबंध, 3. प्रस्तावना, 4. प्रयोग, 5. सामान्यीकरण।

किण्डर गार्डन प्रणाली (फ्रोबेल) :–

- जर्मन शब्द किण्डर गार्डन का अर्थ है – 'बच्चों का बगीचा'
- फ्रोबेल बालकों को एक अविकसित पौधा मानते है जो विद्यालय के अध्यापक रुपी माली के द्वारा सींच कर बड़ा किया जाता है।
- किण्डर गार्डन बच्चों का एक छोटा से विद्यालय है जहाँ बच्चों को मिट्टी की मूर्तियाँ बनाने, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा क्लासिकल गाने सिखाये जाते है।
- किण्डर गार्डन विधि में शिक्षण का कार्य मुख्यतः महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- यह बाल केन्द्रित विधि है जिसमें बच्चों को स्वतंत्र रुप से हँसने, खेलने एवं घुमने दिया जाता है ताकि बालकों में स्वभाविक रुप से उनके गुणों का विकास हो सके।
- इस विधि में खेल, शिशुगीत, उपहार, शिक्षण पाठ्य विधि है। पुस्तकीय ज्ञान को स्वाभाविक रुप से दिया जाता है।

मान्टेसरी विधि (मारिया माण्टेसरी) :–

- बाल मनोविज्ञान पर आधारित इस प्रणाली में व्यवहारिक उपकरणों द्वारा शिक्षा प्रदान किया जाता है।
- इसके अनुसार शिक्षा कर्मेन्द्रियों एवं ज्ञानेन्द्रियों द्वारा दी जानी चाहिए तथा अंत में भाषा शिक्षण किया जाना चाहिए।

ड्रेकाली विधि	–	डॉ० औविड ड्रेकॉल
बुनियादी शिक्षा	–	महात्मा गाँधी
प्रश्नोत्तरी विधि	–	सुकरात
वॉटिंदिया विधि	–	जॉन केनेडी
विनेटिका विधि	–	डॉ० कार्लटन वाशबर्न